

PROF. N. Ram
Assistant Professor
R.B.G.R College
Maharajgarh (Bihar)

T.D.C Part II Economics (Hons.)
Paper IV Public Finance
Module 2 Public Expenditure
लोक व्यय

TOPIC - Classification of Public Expenditure

लोक व्यय का वर्गीकरण

लोक व्यय के वर्गीकरण का अर्थ एवं महत्व (meaning and importance) :-
लोक व्यय के वर्गीकरण से आशय यह है कि राज्य के विभिन्न प्रकार के खर्चों का वैज्ञानिक एवं आर्थिक आधार पर ऐसा व्यवस्थित प्रबन्ध किया जाए कि जिससे हम प्रत्येक प्रकार के व्यय की प्रकृति तथा उसके प्रभावों की जानकारी प्राप्त कर सकें तथा एक व्यय के प्रभावों की दूसरे व्यय के प्रभावों से तुलना कर सकें। अतः विभिन्न प्रकार के सरकारी खर्चों की प्रकृति एवं उनके प्रभावों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए सरकारी व्यय का वर्गीकरण करना अत्यन्त आवश्यक है। अतः जब सरकारी व्यय का वर्गीकरण किया जाता है तो उसके साथ ही साथ सरकारी कार्यों का वर्गीकरण करना भी आवश्यक हो जाता है।

सरकारी व्यय के महत्व पर जोर देते हुए प्रा. गिराज ने कहा है कि अच्छे सरकारी व्यय की कसौटी उसकी कुल माता-पत्नी है। बल्कि यह है कि विभिन्न मदों पर समय-समय पर सापेक्षित रूप में कितनी धनराशि लगाई गई है। इस प्रकार सरकारी व्यय के वर्गीकरण की उपयोगिता इसलिये भी है कि जिससे यह ज्ञात हो सके कि विभिन्न समयों में सरकारी व्यय की प्रत्येक मद का सापेक्षित महत्व क्या रहा है। वर्गीकरण के सम्बन्ध में स्प्रिंगल ने कहा है कि "नियमानुसार तैयार की हुई उन वस्तुओं की ऐसी विस्तृत सूची है जो व्यापार या उद्योग धन्धा के किसी कार्य विशेष अथवा समस्त कार्यों के लिए आवश्यक होती है। वर्गीकरण द्वारा तथ्यों की व्याख्या में सहायता मिलती है और असंबन्धित तथ्यों में संबंध स्थापित करने में सरलता होती है।" विभिन्न विचारकों ने सार्वजनिक व्यय को निम्नलिखित ढंग से वर्गीकृत किया है।

(1) लाभ के आधार पर वर्गीकरण (Classification on the Basis of Benefit)

:- जर्मन विचारक कोहन तथा अमेरिकी विचारक प्लेहन (Plehan) ने सार्वजनिक व्यय को लाभ के आधार पर चार वर्गों में विभाजित किया है।
(क) संपूर्ण समाज को लाभ पहुँचाने वाले सरकारी व्यय :- इस वर्ग में उन व्यय शामिल हैं जो कि संपूर्ण समाज को लाभ पहुँचाते हैं। जैसे प्रशिक्षण, सामान्य प्रशासन तथा शिक्षा आदि।
(ख) ऐसा सार्वजनिक व्यय जिससे परीक्षित रूप से संपूर्ण समाज लाभान्वित

होता है परन्तु प्रत्यक्ष रूप में समाज के कुछ विभिन्न वर्ग ही लाभ होते हैं, यथा बेकारी बीमा, छुट्टावस्था सेवान, बीमारी बीमा, निर्धन सहायता आदि पर किया गया सरकारी व्यय।

(iii) ऐसा सार्वजनिक व्यय निम्नमे कुछ विभिन्न व्यक्तित्व विशेष रूप से तथा अन्य व्यक्ति स्वाभाविक रूप से लाजावित होते हैं यथा पुलिस, लेबर, न्यायालय पर किया गया सरकारी व्यय।

(iv) ऐसा सार्वजनिक व्यय जिससे कुछ विभिन्न व्यक्तित्व की ही लाभ पहुंचता है यथा सार्वजनिक उपक्रमों पर किया गया सार्वजनिक व्यय यह उत्प्रेक्षणीय है कि सार्वजनिक व्यय का उक्त वर्गीकरण सरल होने के बाद भी दोषपूर्ण है। क्योंकि उक्त चार वर्ग एक दूसरे से पूर्णतया अप्रकृष्ट नहीं हैं। तथा इनमें सरलता से एक दूसरे के क्षेत्र में शामिल किया जा सकता है।

(2) आय के आधार पर वर्गीकरण (Classification on the Basis of Income) :- इस एक निष्कर्षन में सरकारी व्यय का वर्गीकरण इस आधार पर किया है कि सरकारी सेवा जो सरकार द्वारा उपभोग की जाती है उसके बदले में उसे किमी आय प्राप्त होती है। निष्कर्षन को वर्गीकरण निम्न प्रकार है।:-

(i) वे व्यय निम्नसे आय या लाभदायक (Revenue) की कोई प्रत्यक्ष प्राप्ति नहीं होती जैसे निर्धन सहायता, छुट्टावस्था आदि। कुछ स्थिति में तो इन व्ययों से प्रत्यक्ष या परीक्ष्य रूप से लाभ भी होती है जैसे ऊर्जा पर होने वाले व्यय आदि।

(ii) वे व्यय निम्नसे आय की कोई प्रत्यक्ष प्राप्ति नहीं होती निम्न व्ययों को परीक्ष्य रूप से लाभ अथवा पहुंचता है जैसे शिक्षा। यह आमतौर पर माना जाता है कि शिक्षित व्यक्ति अधिकतर व्यक्तियों के सुकावले उत्पन्न करदाता सिद्ध होते हैं और इनपर सरकार को अपेक्षाकृत कम व्यय करना पड़ता है।

(iii) वे व्यय निम्नसे लाभ की प्राप्ति अतिरिक्त रूप से होती है। उदाहरण के लिए वह शिक्षा जिससे पीएस सी होती है, आर्थिक सहायता प्राप्त रेल सेवा, चिकित्सा की उपस्था जो कि अपने चार्ज व्यय का अंश प्राप्त कर लेती है।

(iv) ऐसी सार्वजनिक व्यय जिससे सरकार को लाभ व्यय के साथ साथ उत्प्रेक्षित लाभ भी मिल जाता है या देता, एक और तथा राजस्व उपक्रम की उपस्था। प्रोब निर्दोषन का यह वर्गीकरण भी दोषपूर्ण नहीं है क्योंकि एक तो इसमें वर्गीकरण की विशेषताओं का स्पष्ट उल्लंघन नहीं है और दूसरे विभिन्न वर्गों का क्षेत्र भी अधिक स्पष्ट नहीं है।

(3) कार्य के अनुसार वर्गीकरण (Classification According to Functions) :- ~~सर्व~~ जो एका विभाग में सरकारी व्यय का वर्गीकरण सरकार के कार्यों के आधार पर किया है उनमें से सरकारी व्यय को निम्नप्रमाण तीन वर्गों में बांटा है।

(क) सुसंस्करण कार्य :- इस कार्य में प्रशिक्षण, प्रशिक्षण तथा न्यायालयों आदि पर किया जाने वाला समग्र स्क्रिप्टिंग किया जाता है।

(ख) वाणिज्यिक कार्य :- इस कार्य में वे वर्क स्क्रिप्टिंग किंगे जाने हैं जो वाणिज्य की सहायता करने हैं जैसे की उन्निर्दान तथा औद्योगिक प्रदर्शनीया आदि

(ग) विकास कार्य :- इस कार्य में वह व्यय स्थापना है जो देश की राष्ट्रीय आय में तथा सामाजिक कल्याण में सुविधा करें या इनकी सुविधा में सहायक हो जैसे शिक्षा, चिकित्सा, रेलवे, सार्वजनिक मनोरंजन तथा सामाजिक आँकड़ों के संग्रह आदि पर किया गया व्यय आदि।

आलोचना :- इस वर्गीकरण की मुख्य आलोचना भी यही है कि विभिन्न प्रकार के व्ययों का इस प्रकार में कैसे स्थापना हो। इस वर्गीकरण के विभिन्न वर्ग भी परस्पर एक दूसरे से सम्पर्क नहीं है बल्कि एक दूसरे से मिले भुले हुए हैं।

(4) डाटा इन का वर्गीकरण (Classification) :- डाटा इन सार्वजनिक व्यय को दो वर्गों में विभाजित किया है (क) अनुदान (Grant) तथा ख क्रय मूल्य (Purchase Price) जिस व्यय के बदले में सरकार को कोई वस्तु या सेवा प्राप्त होती उसे क्रय शक्ति की श्रेणी में स्थापना है जैसे सरकार द्वारा अपने कर्मचारियों की छिया गया वेतन तथा भव्यरी आदि। वास्तव में सरकारों के अधिक से अधिक डाटा इन का उचित वर्क वैधानिक प्रसिद्ध होता है परन्तु इससे व्यय में अनुदान का किनासा अंश है और क्रय मूल्य का किनासा अंश है।

(5) प्राथमिक एवं गौण व्यय (Primary and Secondary Expenditure) :- जी फिडल्टे बिरात्र ने सरकारी व्यय का वर्गीकरण सरकार के मुख्य एवं गौण कार्यों के आधार पर किया है। उनका कहना है कि आदर्श वर्गीकरण यह है जिसमें सरकारी व्यय को दो ब्रेटो भाग अर्थात् मुख्य तथा गौण व्यय। " मुख्य व्यय में वे सब व्यय स्क्रिप्टिंग किंगे जाने हैं जो कि सरकार को हर स्थिति में स्वयं परते अपने स्वयं में लेने होते हैं। जैसे की प्रशिक्षण, कानून व व्यय तथा की सहायता

तथा गृहलो की आदायगी। गौण व्यय में सामाजिक व्यय, सरकारी-उद्योगों के व्यय तथा कुछ अन्य विधिक व्यय सामिल किये जाते हैं।

सरकार के मुख्य व्यय में चार मुख्य श्रेणियाँ मदे सम्मिलित की जाती हैं:— पुलिस, कानून की व्यवस्था, नगरिक प्रशासन तथा गृहलो की आदायगी। दूसरी और गौण व्यय में भी बर्चस्व सम्मिलित किये जाते हैं जैसे शिक्षा, जनस्वास्थ्य, निर्धनों की सहायता, बेरोजगारी बीमा, अकाश सहायता तथा बसी प्रकार की अन्य सामाजिक सेवाएँ सरकारी उद्योगों के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाने वाले स्वर्गों में— अन्न वाणिज्यिक या औद्योगिक प्रकृति के संस्थान जैसे रेलवे, सिविल नावरे, सड़कें व अन्य निर्माण कार्य, एक व नगर तथा कृषि व औद्योगिक अनुसंधान के लिए आर्थिक सहायता आदि।

आलोचना:— यहाँ यह स्पष्ट होना भी आवश्यक है कि मुख्य एवं गौण भूतद स्वरूप में कोई पूर्ण तथा शुद्ध भूतद नहीं है बल्कि सार्थक भूतद है। इसलिए आलोचकों का कहना है कि सार्थक व्यय का उक्त वर्गीकरण भी व्यवहारिक प्रतीत नहीं होता है क्योंकि जनतावादी और समाजवादी भावना के विकास के फलस्वरूप अलग-अलग राज्य में कार्य का इतना अधिक बिलाल हो गया है कि भी कार्य विध्वंसित होता-वही में गौण समर्थ जाते व दे आज प्राथमिक कार्य होने जाते हैं।

(6) मित का वर्गीकरण:— जान स्टुअर्ट मिल ने सार्थक व्यय को दो वर्गों में रखा है (i) अनिवार्य (Necessary) (ii) स्वेच्छिक (Voluntary) भी व्यय सरकार को अनिवार्य: करना पड़े (यथा स्वास्थ्य, शिक्षा और भाषन पर किया जाने वाला व्यय) इसे प्रथम श्रेणी में रखा भाषाभाषी तथा विद्यार्थी व्यय करना या न करना सरकार की इच्छा पर निर्भर हो गया स्वास्थ्य, शिक्षा, आदि पर किया जाने वाला व्यय इसे द्वितीय श्रेणी में रखा भाषाभाषी।

आलोचना:— मित का वर्गीकरण भी फ्रिडरिश लिश्ट के वर्गीकरण की तरह दीर्घायुक्त है क्योंकि आज के युग में यह बतलाना असंभव है कि कौन सा स्वरुपायी व्यय आवश्यक है तथा कौन सा स्वरुपायी व्यय स्वेच्छिक है।

The End